ATHRAV
AGRICURE
Strengthening agriculture roots...

Athrav Agricure Pvt. Ltd.

ISO 9001:2001 Certified Company

हमारे बारे में

अथ्रव एग्रीक्योर प्राइवेट लिमिटेड भारत की अग्रणी बायोटेक कंपनियों में से एक है। कृषि सम्बन्धी जैविक उत्पादों की निर्माता और आपूर्तिकर्ता कंपनी है। हमारे उत्पादों का उत्पादन आधुनिक नैनो टेक्नोलॉजी और इसरायली तकनीकी पर आधारित है। वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित हमारे उत्पादों में जैविक उर्वरक, जैविक पोषक तत्व, जैविक कीटनाशक, जैविक कवकनाशी, जैव कीटनाशक, जैविक उत्तेजक और प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर्स शामिल हैं। कंपनी कृषि, बागवानी, वृक्षारोपण, फल, फूल और सब्जियों के उत्पादन के लिए जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है।

अथ्रव एग्रीक्योर प्राइवेट लिमिटेड पिछले एक दशक से भारत के अनेक राज्यों में किसानों को टिकाऊ और लाभदायक कृषि की चुनौती पर काबू पाने के लिए स्थायी और दीर्घकालिक कृषि समाधान प्रदान कर रही है और किसानों के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों एवं रासायनिक उर्वरकों के प्रतिस्थापन द्वारा जैविक उर्वरकों के उपयोग के लिए गांवों के किसानों और युवा शिक्षित ग्रामीणों के लिए जागरूकता कार्यक्रम चला रही है।

अथ्रव एग्रीक्योर प्राइवेट लिमिटेड ग्रामीण रोजगार, कृषि व्यवसाय के अवसरों और बढ़ती कृषि आय के माध्यम से ग्रामीण आजीविका व सतत कृषि विकास में सुधार करने के लिए भी योगदान कर रही है।

हमारा लक्ष्य

हमारा लक्ष्य अत्याधुनिक तकनीक से कृषि को लाभदायक जैविक खेती में बदलना और खेती को टिकाऊ और लाभदायक बनाना है ताकि हर किसान एक सफल सूक्ष्म उद्यमी बन सके। जिससे किसानों को अधिक कृषि उपज और लाभप्रदता सुनिश्चित करके बेहतर संसाधन दक्षता प्रदान की जा सके ताकि कम लागत में अधिक पैदावार मिले और किसान सबल होकर संसाधनों का समुचित उपयोग करके आत्मनिर्भर बन सकें।

हमारा उद्देश्य

हमारा उद्देश्य किसानों को रासायनिक और सिंथेटिक उर्वरकों के खतरनाक और हानिकारक प्रभावों के प्रति जागरूकता पैदा करना है ताकि वे जहरीले रसायनों के प्रयोग से बंजर हो रही जमीन एवं विषाक्त फसलों पर रोकथाम लगा सकें और हमारे जैविक उर्वरकों के उपयोग द्वारा अपनी भूमि को दीर्घकालिक पोषण प्रदान करके स्वस्थ्य फसलों का उत्पादन कर सकें। हम किसानों को सशक्त बनाने के लिए, दूसरों की तुलना में बहुत सस्ती कीमतों पर उच्चकोटि के गुणवत्तापूर्ण उर्वरकों की कम मात्रा में अच्छी और बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हमारे उत्पाद

ATHRAV
पुंज
एन.पी.के
N.P.K
08 32 08
उर्वरक/Fertilizer
PUNJ
पोटाश
POTASH
Potash Derived From Molasses
पुंज
PROM
G-4000
ALL IN ONE
N.P.K
SULPHUR DP90%
MITE WIN
A-N-84
SULPHUR
BIO POWER
AN-84
NATURE-99
KILLER-8
A-4 STICKER
AMRAT
G-4000
FUNGI GOLD
पुंज CALCIUM SULPHATE
पुंज N.P.K 20 20 10
पुंज N.P.K 15 15 7.5
पुंज ORGANIC MANURE
CMS
Micro Super

N.P.K
15:15:7.5 , 12:32:06

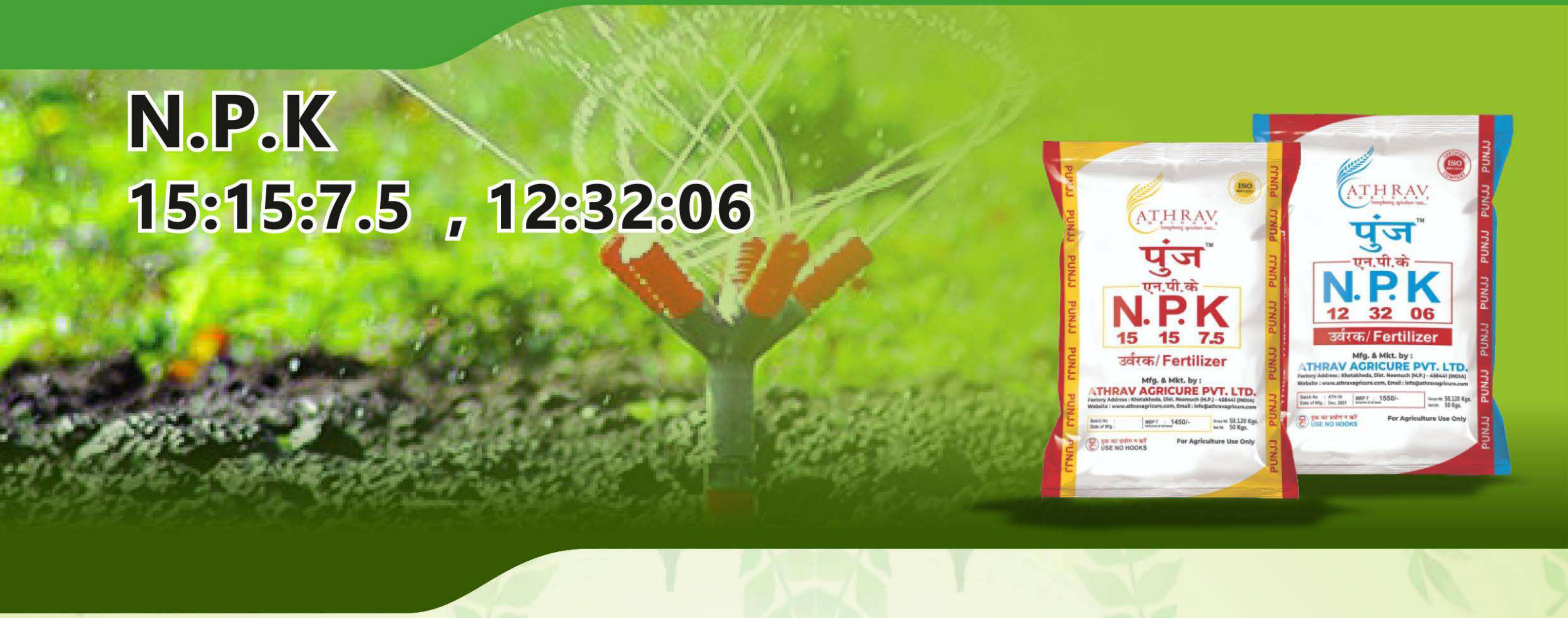

पुंज एनपीके के उपयोग से पौधों में स्टोमेटा के कार्य को कंट्रोल करने में मदद करता है जिससे कार्बन डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन गैस का आदान–प्रदान अच्छी प्रकार से होता है।

पुंज एनपीके में सबसे जरूरी तत्व एनपीक होता है इसी से पौधा वृद्धि करता है यह जड़ों को भी वृद्धि में सहायक होता है।

पुंज एनपीके के उपयोग से पौधा स्टार्च से भरपूर अनाज पैदा करता है जो कि काफी फायदेमंद होता है।

पुंज एनपीके के उपयोग से पौधों को पूरी विटामिन की पूर्ति हो जाती है तथा बीमारी से भी बचाया जा सकता है।

पुंज एनपीके उर्वरक का उपयोग हम उन सभी पौधों में कर सकते हैं जो पौधा फूल से फल देता है क्योकि यह ग्रोथ और पूरा पोषण पौधे को प्रदान करता है ।

पुंज एनपीके की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह पौधों में पानी की कमी को सहन करने की क्षमता प्रदान करता है जिससे पौधों को जीवित रखता है।

पुंज एनपीके पौधों में प्रकाश संश्लेषण करने में मदद करता है जिससे पौधा आसानी से भोजन बनाता है।

पुंज एनपीक पौधों के हरे अंग का विकास करता है।

फसलें – पुंज एनपीके खाद के हर अनुपात को अलग–अलग तरह के पौधे फूल फल सब्जी फसल आदि में डालने के लिए उपयोग किया जाता है।

उपयोग की विधि – टॉप ड्रेसिंग

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता – दानेदार 7 ग्रेड में उपलब्ध 15:15:7.5 ,12:32:06

N.P.K
20:20:10 , 08:32:08

पुंज एनपीके एक केमिकल उर्वरक है जिसमें पौधे के लिए सबसे जरूरी तत्व (नाइट्रोजन) (फॉसफोरस) (पोटैशियम) का मिश्रण होता है। इस उर्वरक के उपयोग से पौधे का सम्पूर्ण विकास होता है। पौधे के लिए लाभदायक एनपीके उर्वरक के अलग–अलग अनुपात के पैकेट में मिलता है।

पुंज एनपीके से पौधों को जरूरी पोषक तत्व नाइट्रोजन, फॉस्फोरस ,पोटेशियम का मिश्रण एक साथ पौधों में मिल जाता है।

पुंज एनपीके उर्वरक पानी में घुलनशील होता है या आसानी से मिट्टी में पानी की उपस्थिति में घुल जाता है।

पुंज एनपीके से पौधों को बिमारी से बचाया जा सकता है।

पुंज एनपीके के उपयोग से जब हम बीज लगते है तो इसकी शक्ति बढ़ाने और नयी जड़ पैदा करने में काफी मदद करता है ।

पुंज एनपीके के उपयोग पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करने के लिए जाना जाता है और उन क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, जो ठंड या शुष्क मौसम का अनुभव करते हैं।

पुंज एनपीके के उपयोग से यह प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाने का काम करता है ।

फसलें - पुंज एनपीके खाद के हर अनुपात को अलग–अलग तरह के पौधे फूल फल सब्जी फसल आदि में डालने के लिए उपयोग किया जाता है।

उपयोग की विधि – फसलों के अनुरूप 50 किलोग्राम से 80 किलोग्राम के मध्य ।

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता – दानेदार 7 ग्रेड में उपलब्ध 08:32:08 , 20:20:10

श्रेणी – रासायनिक , विशेष विकल्प – एम्.ओ.पी

PROM

पुंज प्रोम में विभिन्न फास्फोरस युक्त कार्बनिक पदार्थों जैसे गोबर खाद, फसल अपशिष्ट से चीनी मिल का प्रेस मड, जूस उद्योग का अपशिष्ट पदार्थ, विभिन्न प्रकार की खली आदि को रॉक फास्फेट के साथ कंपोस्टिंग करके बनाया जाता है।

पुंज प्रोम का उपयोग पौधों को फास्फोरस उर्वरक प्रदान करने के लिए किया जाता है।

पुंज प्रोम लवणिय व क्षारीय भूमि में भी प्रभावी रूप से काम करता है जबकि डीएपी ऐसी भूमि में काम नहीं करता है।

पुंज प्रोम मृदा के भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार करके उत्पादन में वृद्धि करता है।

पुंज प्रोम भूमि के पीएच मान को संतुलित करता है तथा ह्यूमस निर्माण में भी सहायक है।

पुंज प्रोम मृदा में लाभदायक सूक्ष्मजीवों की क्रिया विधि को बढ़ाता है।

पुंज प्रोम बीज अंकुरण प्रतिशत में वृद्धि कर के पौधे की जड़ों के विकास में सहायक है।

पुंज प्रोम फसल की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है तथा एक पर्यावरण हितैषी उत्पाद है।

पुंज प्रोम भूमि को नरम बनाने के साथ साथ पोषक तत्वों की उपलब्धता लंबे समय तक बनाए रखता है।

फसलें – पुंज प्रोम सभी अनाज ,दालों ,सब्जियों ,फलों और फूलों की फसलों में इस्तेमाल किया जाता है।

उपयोग की विधि – 1 एकड़ में 100 से 150 किलोग्राम प्रोम का उपयोग किया जाता है।

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता– दानेदार

श्रेणी – जैविक , विशेष विकल्प – डीएपी

Organic Manure

पुंज जैविक उर्वरक एक विशेष विधि से बनाया जाता है इसमें अजोला व पशुओ से निकलने वाले मलमूत्र, गोबर या फिर बचा हुआ चारा, घास व पेड़ पौधों के अवशेषों से तैयार की जाती है ।

पुंज जैविक उर्वरक फसल की उपज और पैदावार के लिए भी अच्छी मानी जाती है, इससे फसल भी काफी अच्छी और विषमुक्त होती है ।

पुंज जैविक उर्वरक से भूमि की पैदावार क्षमता भी बढ़ती है ।

पुंज जैविक उर्वरक प्रकृति द्वारा उत्पन्न सूक्ष्म जीव तथा जीवो का तंत्र हमारी खेती के लिए काफी सहयोग का कार्य करती है ।

पुंज जैविक उर्वरक मिटटी के भौतिक , रसायनिक और जैविक गुणों को सुधारने के लिए मिट्टी में पौधों के लिए आवश्यक समस्त पोषक तत्त्व की आपूर्ति करता है ।

फसलें उर्वरक के हर अनुपात को अलग–अलग तरह के पौधे फूल फल सब्जी फसल आदि में डालने के लिए उपयोग किया जाता है ।

उपयोग की मात्र –: प्रति एकड़ भूमि में 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 24 किलोग्राम फास्फोरस, 24 किलोग्राम पोटाश व 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट की आवश्यकता होती है ।

उपयोग करने का समय –: जैविक उर्वरक का उपयोग फसल में पुष्पन कि क्रिया से लेकर फलन की क्रिया तक लगभग फसल के शुरू में या 35–70 दोनों के बीच जैविक उर्वरक का उपयोग करना उचित माना जाता है क्योंकि इसी समय में पौधे को जैविक उर्वरक की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है।

उपयोग की विधि – 50 किलोग्राम से 100 किलोग्राम प्रति एकड़ उपयोग किया जाता है ।

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता – दानेदार

श्रेणी – रासायनिक , विशेष विकल्प – डीएपी

Potash
P.D.M (Potash Derived From Molasses)

पी डी एम् पोटाश मिट्टी के कोलाइड्स में पोटेशियम और सिलिका अणुओं के बीच के बंधन को तोड़कर जड़ क्षेत्र/ पौधों की प्रणाली को उपलब्ध कराता है। जिससे पैदावार में वृद्धि होती है ।

पी डी एम् पोटाश जड़ों की समुचित वृद्धि करके फसलों को उखड़ने से बचाता है। पोटाश के प्रयोग से पौधों की कोशिका दीवारें मोटी होती है ओर तने को कोष्ठ की परतों में वृद्धि होती रहती है, जिसके फलस्वरूप फसल के गिरने में रक्षा होती है।

पी डी एम् पोटाश फसलों को मौसम की प्रतिकूलता जैसे– सूखा, ओला पाला तथा कीड़े–व्याधि आदि से बचाने में मदद करता है।

पी डी एम् पोटाश पौधों की वृद्धि एवं विकास के लिये पोटाश आवश्यक है।

जिन फसलों को पोटैशियम की पूरी मात्रा मिलती है उन्हें वांछित उपज देने के लिये अपेक्षाकृत कम पानी की आवश्यकता होती है इस प्रकाश पोटैशियम के प्रयोग से फसल की जल–उपयोग–क्षमता बेहतर होती है।

पी डी एम् पोटाश फसलों की गुणवत्ता बढ़ाने वाला सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। जिसके कारण बीज बहुत कम अनुपात में उपजते है। पोटाश का उपयोग फसल में पुष्पन कि क्रिया से लेकर फलन की क्रिया तक लगभग फसल के 35–70 दोनों के बीच पोटाश का उपयोग करना उचित माना जाता है क्योंकि इसी समय में पौधे को पोटाश की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है।

उपयोग की विधि – प्रति एकड़ भूमि में 24 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता – दानेदार , पी डी एम् फॉर्म

श्रेणी – रासायनिक , विशेष विकल्प – रसायनीयक पोटाश

C.M.S
Calcium Magnesium Sulphate

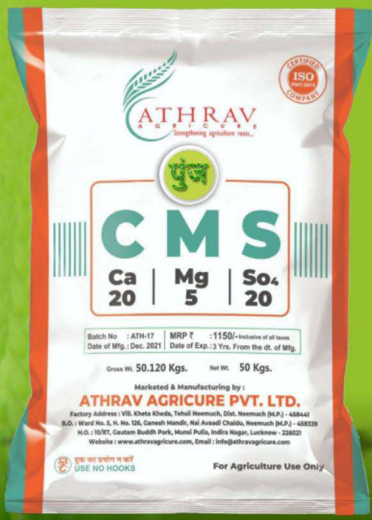

सीएमएस सूक्ष्म पोषक मिट्टी के निर्माता और आपूर्तिकर्ता के रूप में एक विश्वसनीय नाम हैं इसे कंडीशनर ग्रैन्यूल भी कहा जाता है।

सीएमएस कैल्शियम मैग्नीशियम सल्फर होता है और मिट्टी की कंडीशनिंग में मदद करता है। मिट्टी के अनुप्रयोग के लिए किफायती कंडीशनर ग्रेन्यूल्स हैं और फसल की पैदावार में सुधार के साथ–साथ गुणवत्ता भी बढ़ाते हैं ।

फ़ायदे :
उत्पाद में कैल्शियम, मैग्नीशियम और सल्फर का संतुलित अनुपात होता है ।

कैल्शियम: यह पौधे, जड़ों और पत्तियों के विकास में मदद करता है। यह पौधे के तनाव को कम करता है और कीटों से सुरक्षा देता है। यह जड़ों को भी मजबूत करता है, पौधे की वृद्धि और उत्पादन में वृद्धि करता है।

मैग्नीशियम : यह फसल के पत्तों के पीलेपन के कारणों को पूरी तरह से मिटा देता है
पत्तियों को हरा बनाए रखना और फसलों की गुणवत्ता और उपज में वृद्धि करना। ये तो तैलीय फसलों के लिए बहुत उपयोगी है।

सल्फर: सल्फर सल्फेट के रूप में होता है, यह पौधे को आसानी से मिट्टी से फास्फोरस ग्रहण करने में मदद करता है।सल्फर अमीनो एसिड के उत्पादन के लिए आवश्यक है, जो सभी जीवित चीजों में पाए जाने वाले प्रोटीन के निर्माण खंड हैं।

विलवणीकरण: यह मिट्टी के विलवणीकरण में मदद करता है। यह मिट्टी की लवणता को दूर करता है। पीएच को बनाए रखनाः यह अम्लीय/क्षारीय प्रकृति से मिट्टी को निष्क्रिय करता है। यह तटस्थ हैप्रकृति और मिट्टी में मिश्रित होने पर मिट्टी की विशेषताओं को बदल देती है और बफर बना देती है और इसलिए मिट्टी की अम्लता/क्षारीयता दोनों को हटा देता है।

सरंध्रता : जहां भूमि में कठोर मिट्टी है और/या के व्यापक उपयोग के कारण रासायनिक खाद से मिट्टी सख्त हो जाती है। उत्पाद जब मिट्टी में मिलाया जाता है तो मिट्टी और भूमि की विशेषताओं को बदल देता है और ढीला हो जाता है । जल प्रतिधारणः उत्पाद मिट्टी में नमी बनाए रखने में मदद करता है और इसलिए पानी की आवश्यकता को कम होती है। फसल की पैदावार में सुधार के साथ–साथ गुणवत्ता भी बढ़ाते हैं ।

उपयोग की विधि – टॉप ड्रेसिंग

पैकिंग– 50 किलोग्राम बोरी

उपलब्धता – दानेदार

नमी : 5% से नीचे

G-4000 GRANUAL

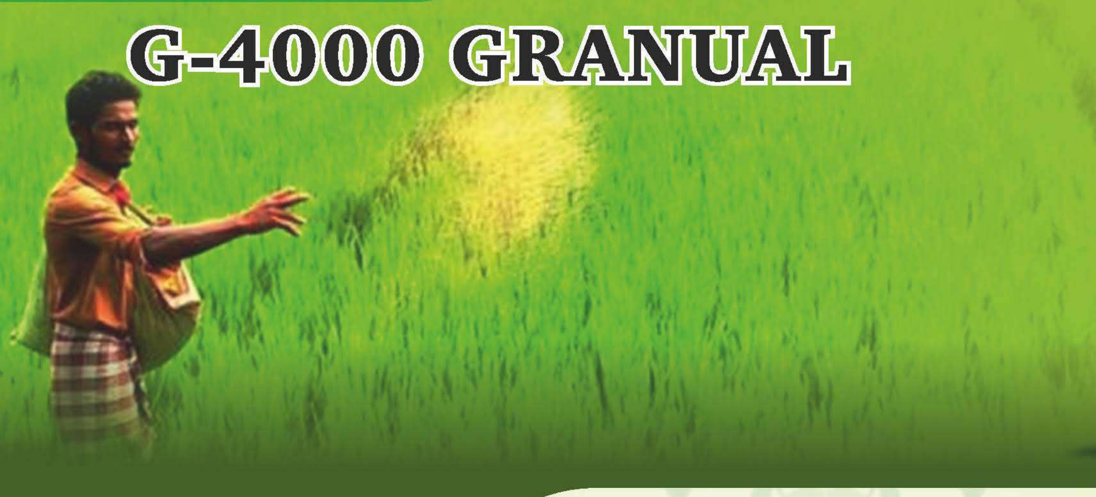

अथ्रव जी – 4000 दानेदार आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक उत्पाद है जो फसलों के संतुलित विकास को बढ़ावा देता है, मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करता है और प्रोटीन पोषण को बढ़ाता है।

अथ्रव जी – 4000 दानेदार पौधों के वृद्धि वर्धक के रूप में कार्य करता है, विटामिन और एंजाइम जैसे कई अन्य खनिज एवं पोषक तत्त्व प्रदान करता है।

अथ्रव जी – 4000 दानेदार पौधे की तृतीयक जड़ों का विकास करता है जिससे की जमीन से पोषक तत्वों का अवशोषण अधिक होता है।

अथ्रव जी – 4000 दानेदार मिट्टी को नरम और उपजाऊ बनाता है, मिट्टी में वायु संचारण में सुधार करता है और प्रत्यारोपण के झटके को कम करता है।

अथ्रव जी – 4000 दानेदार मिट्टी के कंडीशनर अनुकूलक, के रूप में कार्य करता है, मृदा क्षरण को रोकता है और मिट्टी में लंबे समय तक नमी बनाए रखता है।

पैकिंग – 5 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक मे।

उपलब्धता – दानेदार रूप मे।

श्रेणी – जैविक उर्वरक।

विशेष उपयोग – अथ्रव जी– 4000 दानेदार का उपयोग डी ए पी के स्थान पर किया जाता है।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

अथ्रव जी – 4000 उपयोग की विधि

उपयोग मात्रा : 1 एकड़ में 10 से 35 किलो का छिड़काव (फसलों के अनुरूप) उपयोग करने का समय बुवाई /रोपाई के समय या मिट्टी चढ़ाने के समय उपयोग की विधि प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।

A-N 84 GRANUAL

अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार एक शक्तिवर्धक एवं उपजवर्धक है जो मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की प्रजनन और पुनर्योजी क्षमता को संरक्षित करता है।

अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार पौधे के घनत्व को बढ़ाता है, विपुल फूल को प्रेरित करता है जिससे पैदावार बढ़ती है।

अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार पौधों की झिल्लियों की जड़ों के गठन और पारगम्यता में तेजी लाता है, जिससे पोषक तत्वों के सेवन को बढ़ावा मिलता है।

अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार एक जैविक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और पौधों में विटामिन की मात्रा को बढ़ाता है।

अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार जड़ों के विकास को उत्तेजित करता है और जड़ प्रणालियों के विकास को बढ़ाकर कोशिका विभाजन में मदद करता है।

पैकिंग: 1 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक में।

उपलब्धता: दानेदार रूप में।

श्रेणी : जैविक उर्वरक

विशेष विकल्प: अथ्रव ए– एन– 84 दानेदार का उपयोग यूरिया के स्थान पर किया जाता है।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की मात्रा: 1 एकड़ में 5 से 25 किलो का छिड़काव फसलों के अनुरूप।

उपयोग करने का समय: बुवाई / रोपाई के समय या यूरिया के छिड़काव की स्थान इसका प्रयोग कर सकते हैं।

उपयोग की विधि: प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।

G- 4000 [LIQUID]

अथ्रव जी–4000 आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक उत्पाद है जो पौधे के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए हार्मोन, विटामिन और एंजाइम, जो प्राकृतिक विकास उत्तेजक हैं, को उपलब्ध कराता है।

अथ्रव जी–4000 में समुद्री शैवालों का अर्क है जिसमें लाभकारी ट्रेस खनिज और नाइट्रोजन, पोटेशियम, फॉस्फेट और मैग्नीशियम सहित तैयार पोषक तत्व है।

अथ्रव जी–4000 मिट्टी के कार्बनिक पदार्थों को बढ़ाता है, विभिन्न लाभकारी सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करता है, बेहतर बीज अंकुरण प्रदान करता है, फसलों की संतुलित वृद्धि को बढ़ावा देता है, गुणवत्ता में सुधार करता है और उपज को बढ़ाता है।

अथ्रव जी–4000 का सबसे महत्वपूर्ण काम मिट्टी को भुरभुरी करना और उर्वरा शक्ति में वृद्धि करना है जिससे जड़ों का विकास अधिक होता है।

अथ्रव जी–4000 पौधे की कोशिकाओं की वृद्धि को बढ़ावा देता है और इससे स्वास्थ्यवर्धक, मजबूत और अधिक रोग प्रतिरोधक पौधे तैयार होते हैं।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 25 से 30 मिली मिलाकर छिड़काव।

उपयोग करने का समय–

1. बुवाई / रोपण के 15 से 20 दिन बाद जब 4 से 5 पक्तियां पौधों में आ जाये।
2. रोपण से पहले, बीज को अथर्व जी–4000 लिक्विड में भिगोने से उन्नत बीज अंकुरण होता है, शक्तिशाली जड़ों का विकास होता है और मृदाजनित रोगों से बचाव होता है।
3. बेल वाली फसलों में 10 से 15 दिनों में।
4. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 5 महीने बाद या फली बनने की प्रक्रिया के समय।
5. 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों या बौर आने के समय।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि : बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंगः 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली और 1 ली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धताः तरल रूप में।
श्रेणीः जैविक उर्वरक।
विशेष विकल्पः अथ्रव जी–4000 का उपयोग डी ए पी के स्थान पर किया जाता है।

A-N-84 LIQUID

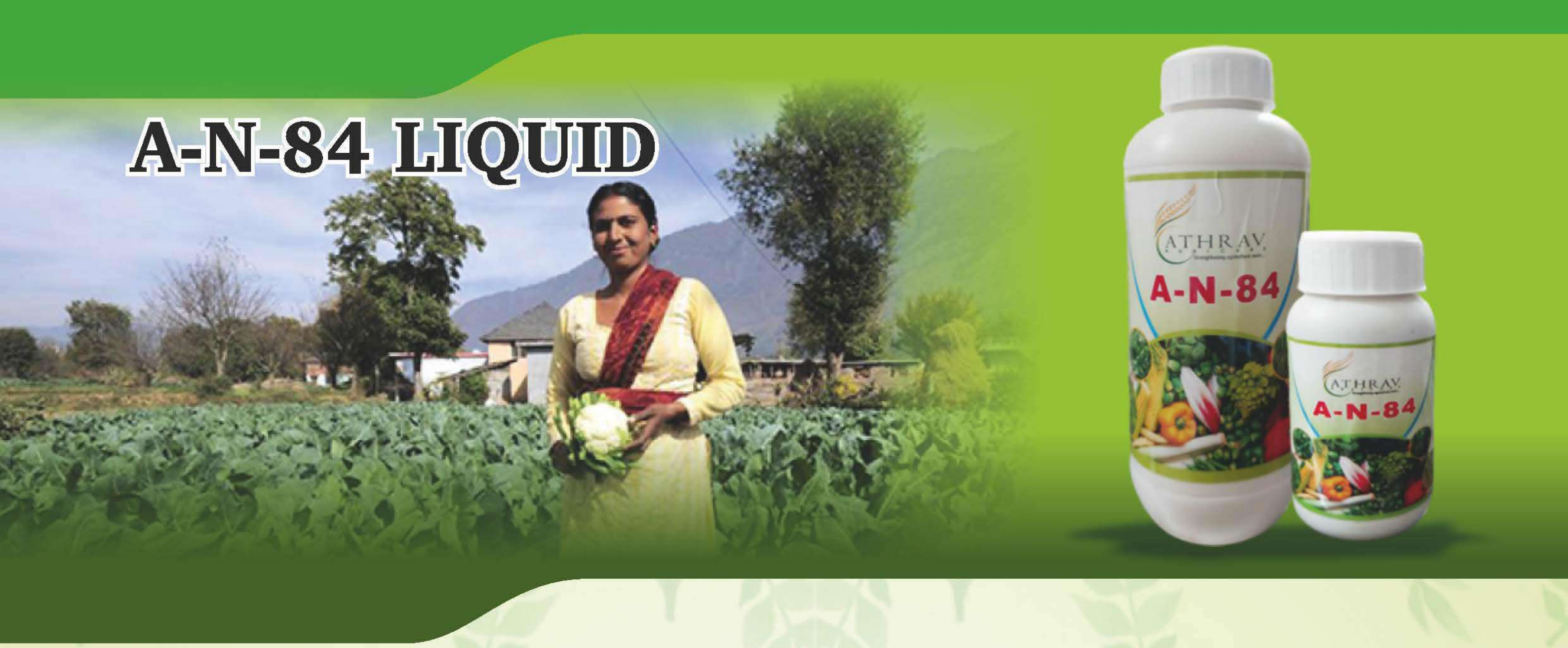

अथ्रव ए– एन– 84 तरल वनस्पतिक प्रोटीनों का समृद्ध श्रोत है जो प्रोटीन की कमी को दूर करने के लिए फसल पर प्रयोग किया जाता है।

अथ्रव ए– एन– 84 तरल यह एक कार्बनिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और जड़ वृद्धि में गतिशीलता प्रदान करता है।

अथ्रव ए– एन– 84 तरल प्राकृतिक नाइट्रोजन को वायुमंडल से ग्रहण करके पोषक तत्वों में परिवर्तित कर के पौधों को उपलब्ध करवाता है।

अथ्रव ए– एन– 84 तरल के प्रयोग से अंकुरण जल्दी होता है और पौधे की टहनियों की संख्या में बढ़ोतरी होती है या फुटाव ज्यादा होता है।

अथ्रव ए– एन– 84 तरल जड़ सुदृढ़ीकरण, स्वस्थ पत्ते, फल की बेहतर दिखावट, उन्नत बीज अंकुरण और बेहतर उपज प्रदान करता है। इसका जब खेतों में छिड़काव किया जाता है, तो फसल की वृद्धि व सफल के स्वास्थ में तेजी से सुधार करता है।

अथ्रव ए– एन– 84 तरल का उपयोग यूरिया के स्थान पर किया जाता है।

उपयोग की मात्राः

16 ली पानी में 25 से 30 मिली मिलाकर छिड़काव पानी के साथ मिलाकर।

उपयोग करने का समय–

1. बुवाई /रोपण के 20 से 25 दिन बाद।
2. रोपण से पहले, बीज को अथ्रव ए– एन–84 तरल में भिगोने से बीज अंकुरण, जड़ विकास और शुरुआती अंकुर शक्ति में तेजी से वृद्धि होती है।
3. बेल वाली फसलों में 15 से 20 दिनों में।
4. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 4 महीने बाद ।
5. 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों या बौर आने के समय।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

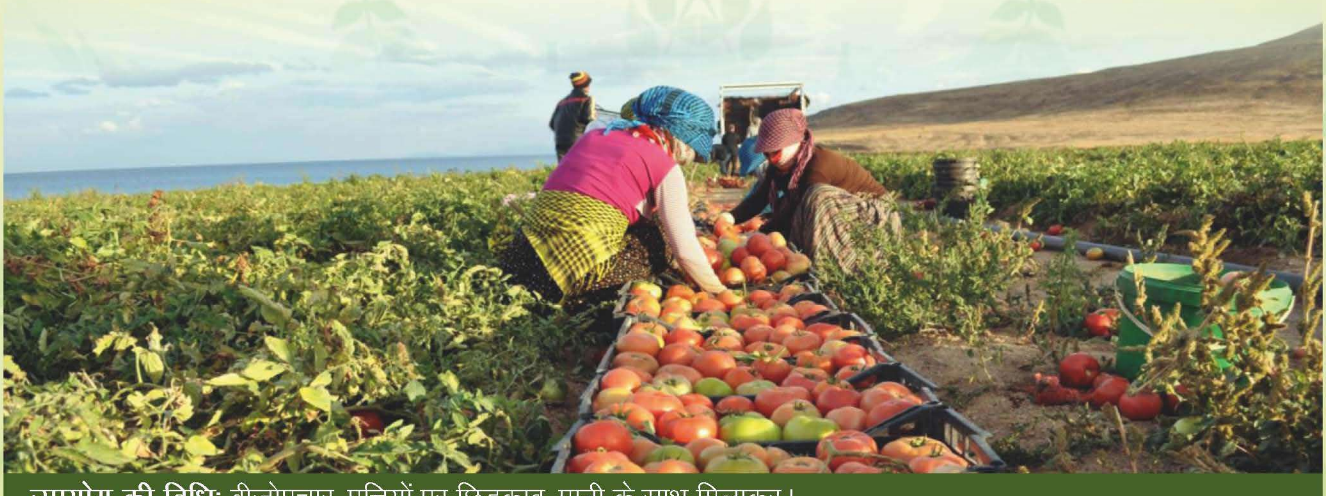

उपयोग की विधिः बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंगः 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली और 1 ली के बोतल पैक में ।
उपलब्धताः तरल रूप में।
श्रेणीः जैविक उर्वरक।
विशेष उपयोगः अथ्रव ए– एन– 84 तरल का उपयोग यूरिया के स्थान पर किया जाता ।

ZINC MONO 33%

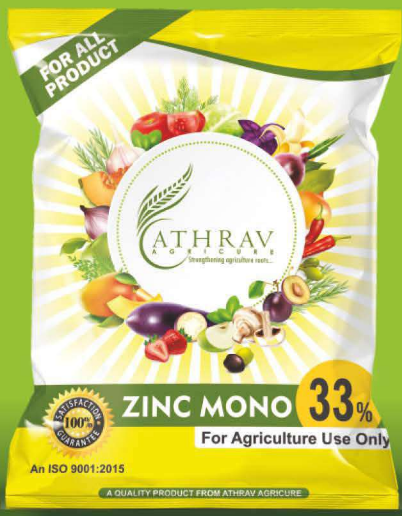

अथ्रव मोनो 33— का उपयोग फसलों में जिंक की कमी को रोकने और पूरा करने के लिए पोषक तत्त्व के रूप में किया जाता है।

अथ्रव मोनो 33— प्रोटीन संश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, कार्बोहाइड्रेट, आक्सीजन और एंजाइम गतिविधि का उत्पादन बढ़ाता है।

अथ्रव मोनो 33— प्रोत्साहक के रूप में वनस्पति विकास को नियंत्रित करता है।

अथ्रव मोनो 33— पर्यावरणीय तनाव और रोग जनकों के खिलाफ प्रतिरोध विकसित करता है।

अथ्रव मोनो 33— पौधों की समय पर परिपक्वता सुनिश्चित करता है और फसलों में जस्ता की दीर्घ कालिक आपूर्ति प्रदान करता है।

उपयोग की मात्रा : 1 एकड़ में 3 से 5 किलो का छिड़काव, फसलों के अनुरूप, ।

पहला छिड़कावः बुवाई/रोपाई के समय या अंकुरण के समय।

दूसरा छिड़कावः बुवाई/रोपण के 55 से 60 दिन बाद या पत्तियों के विकसित होने के समय।

1. बेल वाली फसलों में 35 से 40 दिनों में या पत्तियों के विकसित होने के समय।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में 5 से 6 महीने बाद।
3. 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों के विकसित होने के समय।

फसलेः

बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।

पैकिंगः 1 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक में।

उपलब्धताः पाउडर रूप मे।

SULPHUR WDG

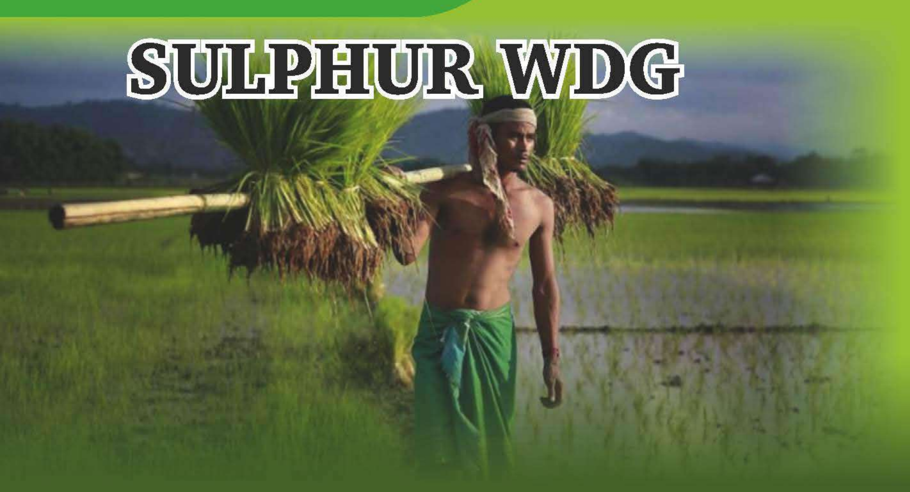

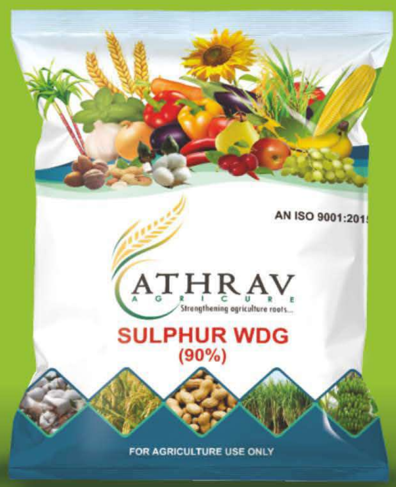

अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी सल्फर की कमी को पूरा करके मिट्टी के पी एच और मिट्टी की चालकता में सुधार करता है।

अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी मिट्टी के अघुलनशील लवणों को फसल के लिए आसान घटकों में परिवर्तित करता है, जिसके परिणाम स्वरूप उपज अच्छी होती है, फसल की गुणवत्ता बेहतर होती है,

अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी पौधों की उत्पादकता से संबंधित घटकों को सुधारने में मदद करता है जिससे मिट्टी का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और पौधों के आवश्यक पोषक तत्वों की दक्षता में सुधार होता है।

अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी एक कवकनाशी के रूप में भी कार्य करता है और कोशिकाओं के भीतर श्वसन को बाधित करके रोग फैलाने वाले बीजाणुओं को मारता है।

अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी पाउडर फफूंदी, जंग और पत्ती झुलसा जैसे फंगल रोगों का मुकाबला करने के लिए एक निवारक उपाय के रूप में प्रभावी है।

फसलों में सल्फर की कमी के लक्षण जिनपर अथ्रव सल्फर डब्लूडीजी बेहद असरदायक है :

1. पौधे छोटे और पतले डंठल वाले होते हैं, उनकी वृद्धि मंद होती है।
2. अनाज में परिपक्वता में देरी होती है।
7. फलियों में नोड्यूलेशन खराब हो जाता है।
8. फल पूरी तरह से परिपक्व नहीं होते हैं और हल्के–हरे रंग में रहते हैं।
9. युवा पत्तियों में क्लोरोसिस (पीलापन) दिखाई देता है।
10. पत्ते पीले–सफेद हो जाते हैं, पीली धारियां दिखाई देती हैं, विकास मंद होता है और छोटे फल पैदा होते हैं।

उपयोग की मात्राः 1 एकड़ में 5 से 7 किलो का छिड़काव फसलों के अनुरूप।

उपयोग करने का समयः पहला छिड़काव / बुवाई / रोपाई के समय या अंकुरण के समय।

दूसरा छिड़कावः

1. बुवाई / रोपण के 55 से 60 दिन बाद या पत्तियों के विकसित होने के समय।
2. बेल वाली फसलों में 35 से 40 दिनों में या पत्तियों के विकसित होने के समय।
3. 1 साल से 2 साल की फसलों में 5 से 6 महीने बाद।
4. 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों के विकसित होने के समय।

उपयोग की विधिः प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, फंगल या बैक्टीरियल रोगों में भी कर सकते हैं।
पैकिंगः 1 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक ।
उपलब्धताः सूक्ष्म दानेदार (क्रिस्टल) रूप में।
श्रेणीः मैक्रोन्यूट्रिएंट (स्थूल पोषक तत्व)।

SULPHUR DP 90%

अथ्रव सल्फर डी पी का उपयोग क्लोरोफिल उत्पादन, प्रोटीन संश्लेषण, पौधे की वृद्धि और जड़ संरक्षण के लिए किया जाता है।

अथ्रव सल्फर डी पी का उपयोग फफुन्दीय संक्रमण को रोकने के लिए भी किया जाता है फंगल स्पोर्स को अंकुरित होने से रोकता है।

अथ्रव सल्फर डी पी बीज में तेल के प्रतिशतता को विकसित करता है और तेलों के संश्लेषण में आवश्यक है, विशेष रूप से तेल फसलों में।

अथ्रव सल्फर डी पी मृदा जनित रोग कारकों का पूर्ण रूप से विनाश करके उनके द्वारा होने वाली विभिन्न बीमारियों जैसे बीज सड़न, आर्द्रगलन, मूल विगलन, अंगमारी एवं म्लानि रोग के नियंत्रण में सहायक है।

अथ्रव सल्फर डी पी प्याज और लहसुन जैसी फसलों में पाए जाने वाले वाष्पशील यौगिकों को बनाता है और फसल की पैदावार बढ़ाता है।

फसलों में सल्फर की कमी के लक्षण जिनपर अथ्रव सल्फर डी पी बेहद असरदायक है।

1. युवा पत्तियों का समय से पहले सूखना और मुरझा जाना है।
2. तना कमजोर होते ही पत्तियां गिर जाती हैं।
3. फूल काफी कमी हो जाना व फली का सिकुड़ जाना।
4. खराब शाखाओं के साथ स्टेम पतला रहता है।
5. फूलों की कलियों की संख्या, पौधों की ऊंचाई और टिलर की संख्या कम हो जाती है।
6. पत्तियों और तने के नीचे की तरफ एक लाल रंग का निशान दिखाई देता है। फूल समय से पहले खराब हो जाते हैं।

उपयोग की मात्रा : 1 एकड़ में 5 से 7 किलो का छिड़काव (फसलों के अनुरूप)।

पहला छिड़काव : बुवाई / रोपाई के समय या अंकुरण के समय।

दूसरा छिड़काव :

(अ) बुवाई / रोपण के 55 से 60 दिन बाद या पत्तियों के विकसित होने के समय।

(ब) बेल वाली फसलों में 35 से 40 दिनों में या पत्तियों के विकसित होने के समय।

(स) 1 साल से 2 साल की फसलों में 5 से 6 महीने बाद।

(द) 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों के विकसित होने के समय।

फसलें: बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि: प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।

पैकिंग: 1 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक में।

उपलब्धता: सूक्ष्म दानेदार (क्रिस्टल) रूप में।

श्रेणी: मैक्रोन्यूट्रिएंट (स्थूल पोषक तत्व)।

FERROUS SULPHATE

अथ्रव फेरस सल्फेट एक कंडीशनर अनुकूलक के रूप में उपयोग किया जाता है, कोशिका विभाजन और वृद्धि से जुड़ी प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा देता है और गुणवत्ता में सुधार करता है।

अथ्रव फेरस सल्फेट उच्च क्षारीय मिट्टी के पी एच को कम करने वाला एक मृदा संशोधक है जिससे मिट्टी के पोषक तत्व पौधे तक आसानी से पहुंच सकें।

अथ्रव फेरस सल्फेट का उपयोग क्लोरोसिस पत्तियों का पीलापन, को ठीक करने के लिए और क्लोरोफिल के उत्पादन के लिए किया जाता है।

अथ्रव फेरस सल्फेट मिट्टी में आयरन की घुलनशीलता और विलेयता को बढ़ाता है, पौधों में आयरन की कमी को पूरा करता है, मिट्टी के भीतर खनिजों को भी घोलता है और उन्हें पौधों की जड़ों के लिए उपलब्ध कराता है।

अथ्रव फेरस सल्फेट ऑक्सीजन, एंजाइम और प्रोटीन वाहक के रूप में कार्य करता है मिट्टी के वातावरण को अम्लीकृत करने से रोकता है।

उपयोग की मात्रा : 1 एकड़ में 10 से 15 किलो का छिड़काव फसलों के अनुरूप।

उपयोग करने का समय:

पहला छिड़काव: बुवाई / रोपाई के समय या अंकुरण के समय।

दूसरा छिड़काव: बुवाई / रोपण के 55 से 60 दिन बाद या पत्तियों के विकसित होने के समय।

बेल वाली फसलों में 35 से 40 दिनों में या पत्तियों के विकसित होने के समय।

1. साल से 2 साल की फसलों में 5 से 6 महीने बाद।
2. साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों के विकसित होने के समय।

फसलें:

बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि : प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।

पैकिंग : 5 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक में।

उपलब्धता : सूक्ष्म दानेदार (क्रिस्टल) रूप में।

श्रेणी : सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रो नुट्रिएंट) उर्वरक।

MICRO SUPER

अथ्रव माइक्रो सुपर कई सूक्ष्म तत्वों का प्रमुख अवयव है जो एक कार्यात्मक, संरचनात्मक या नियामक के रूप में कार्य करता है।

अथ्रव माइक्रो सुपर पौधों के विकास की प्रक्रियाओं को एक विस्तृत श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे कि वृद्धि हार्मोन उत्पादन और इंटरनोड जहां से पत्तियां उगती हैं उन दो गांठों के मध्य के पेड़ के तने का भाग में बढ़ाव करता है।

अथ्रव माइक्रो सुपर ऑक्सीजन के निर्माण में आवश्यक है, जो विकास विनियमन और स्टेम बढ़ाव में मदद करता है, पौधे की वृद्धि के लिए आवश्यक हैं और संतुलित फसल पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

अथ्रव माइक्रो सुपर पत्तियों के ऊपरी भाग में पड़ने वाले भूरे रंग के धब्बों को दूर करता है और विकृत पत्तों को आकार देता है।

अथ्रव माइक्रो सुपर पौधे को क्लोरोफिल का उत्पादन करने में मदद करता है, मिट्टी में सूक्ष्म तत्वों की कमी को पूरा करता है, प्रारंभिक विकास चरणों को नियंत्रित करता है और फल, बीज और जड़ प्रणाली के विकास को बढ़ाता है।

उपयोग की मात्रा : 1 एकड़ में 5 से 7 किलो का छिड़काव, फसलों के अनुरूप।

पहला छिड़कावः बुवाई/रोपाई के समय या अंकुरण के समय।

दूसरा छिड़कावः बुवाई/रोपण के 55 से 60 दिन बाद या पत्तियों के विकसित होने के समय।

1. बेल वाली फसलों में 35 से 40 दिनों में या पत्तियों के विकसित होने के समय।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में 5 से 6 महीने बाद।
3. 2 साल से अधिक की फसलों में नयी पत्तियों के विकसित होने के समय।

फसलेंः

बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः प्रसारण के माध्यम से मिट्टी में छिड़काव, शीर्ष ड्रेसिंग, साइड ड्रेसिंग।
पैकिंगः 1 किलो के एचडीपीई प्लास्टिक पैक में।
उपलब्धताः पाउडर रूप में।
श्रेणीः सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोनुट्रिएंट)

BIO NK 9000

अथ्रव बायो एनके 9000 मुख्य रूप से प्राथमिक पोषक तत्वों से बना एक जटिल पदार्थ है जो पौधों में कई विकास संबंधी एंजाइमों की सक्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अथ्रव बायो एनके 9000 विशेष रूप से पत्तियों, तनों और शाखाओं के विकास में सहायक है।

अथ्रव बायो एनके 9000 यौगिकों में ऊर्जा के भंडारण के लिए सहायक हैं और वायुमंडलीय नाइट्रोजन को अमोनिया में परिवर्तित करता है।

अथ्रव बायो एनके 9000 प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को तेज करता है, जिससे पौधे में हरापन आता है, शाखाओं में वृद्धि होती है और फली मे अनाज भरने की प्रक्रिया में शर्करा को माण्ड में बदल देता है।

अथ्रव बायो एनके 9000 स्वस्थ पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक कार्यों में भूमिका निभाता है जैसे संरचनात्मक ताकत, फसल की गुणवत्ता, बीज उत्पादन, जड़ विकास और फल के पकने मे भी योगदान प्रदान करता है।

अथ्रव बायो एनके 9000 फलों की कई गुणवत्ता विशेषताओं जैसे माप, आकार, रंग और समान स्वाद में योगदान देता है।

उपयोग की मात्राः

16 ली पानी में 25 से 30 मि.ली. मिलाकर छिड़काव।

पहला छिड़कावः

बुवाई /रोपण के 15 से 20 दिन बाद या अंकुरण व कल्लों के फुटाव के समय।

दूसरा छिड़कावः

1. बुवाई /रोपण के 60 से 65 दिन बाद या तना वृद्धि के समय।
2. बेल वाली फसलों में 15 से 20 दिनों में या अंकुरण व कल्लों के फुटाव के समय।
3. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 4 महीने बाद या तना वृद्धि के समय।
4. 2 साल से अधिक की फसलों में नए कल्लों के विकसित होने के समय।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंगः 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली और 1 ली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धताः तरल रूप में।
श्रेणीः जैविक उर्वरक।
विशेष विकल्पः अथ्रव बायो एन के 9000 का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर किया जाता है।

SULPHUR LIQUID

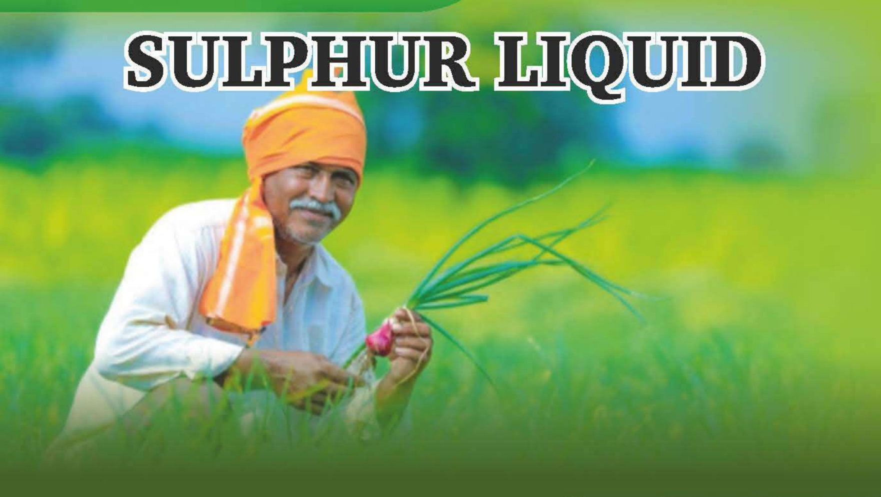

अथ्रव सल्फर तरल पौधे के आहार में एक अच्छे पूरक के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह एक माध्यमिक पोषक तत्व है और प्रोटीन उत्पादन में भी मदद करता है।

अथ्रव सल्फर तरल विकास प्रोत्साहक के रूप में कार्य करता है और मिट्टी जनित रोगजनकों से अंकुरित बीज, जड़ों और उभरते अंकुरों की रक्षा करता है।

अथ्रव सल्फर तरल मिट्टी और पौधों में 'सल्फर की कमी' को पूरा करता है और रोगों को नियंत्रित करता है।

अथ्रव सल्फर तरल फसलों में पत्तियों पर लगने वाले भुकड़ी और घुनों को रोकता है, फसल की पैदावार बढ़ाता है और उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार करता है।

अथ्रव सल्फर तरल सरसों, प्याज और लहसुन को स्वाद देने में मदद करता है और माइक्रोबियल रोगजनकों के खिलाफ पौधों की रक्षा करता है।

फसलों में सल्फर की कमी के लक्षण जिनपर अथ्रव सल्फर तरल बेहद असरदायक है:

1. पौधे में एक समान पीला हरे रंग का क्लोरोसिस।
2. शिरा ऊतक से भी अधिक पतले हो जाती है।
3. पत्तियों का विघटन।
4. पत्तियों में मजबूत बैंगनी रंग।
5. जब कमी चरम पर होती है, तो पौधे में बैंगनी रंग के डंठल और गहरे पीले रंग के बहुत सारे पत्ते होते हैं।

उपयोग की मात्रा: 16 ली पानी में 25 से 30 मिली मिलाकर छिड़काव।

उपयोग करने का समय:

पहला छिड़काव:

1. बुवाई / रोपण के 15 से 20 दिन बाद या कल्लो के फुटाव के समय।

दूसरा छिड़काव:

1. बुवाई / रोपण के 40 से 50 दिन बाद या फली बनने की प्रक्रिया के समय।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 6 महीने बाद।
3. 2 साल से अधिक की फसलों में फूल व फल आने से पहले।

फसलें :— बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि: बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।

पैकिंग: 500 मिली और 1 ली के एचडीपीई बोतल पैक में।

उपलब्धता: तरल रूप में।

श्रेणी: मैक्रोन्यूट्रिएंट (स्थूल पोषक तत्व)।

FUNGI GOLD

अथ्रव फंगी गोल्ड का उपयोग परजीवी कवक या उनके पुनरादपकों को मारने के लिए किया जाता है।
अथ्रव फंगी गोल्ड कवक की प्रजनन क्षमता को निष्क्रिय करके रोग के विकास को सीमित कर देता है और बैक्टीरिया के हमले के प्रतिरोध को प्रेरित करता है।
अथ्रव फंगी गोल्ड पौधे को तनाव पूर्ण, सूखे और अत्यधिक तापमान जैसी विषम स्थितियों के प्रति सहिष्णुता बढ़ाने में मदद करता है, जिसके परिणाम स्वरुप पौधे स्वस्थ, बीज की उच्चतर गुणवत्ता, शक्तिशाली डंठल और अंततः उपज उच्चतर होती है।
अथ्रव फंगी गोल्ड का उपयोग सभी प्रकार के व्यापक कवक, फफूँदी और जीवाणु रोगों (टूण्डू, किट्ट, ढीला कण्ड, झुलसा, अरगट, उकठा, खेरा, बंट, सूखा, कोयलिया, फाइलोडी, तुंगुरु, पीत शिरा, टिक्का, कह आयी, ग्राशि शूट, मोल्या, चूर्णल, ब्लैक आर्म, बन्झा, बुकनी, भूरा धब्बा, शैथिल, पर्णच्छाद अंगमारी, कोमल फफूंदी, पाउडरी फफूंदी, मोजेक, लाल सड़न, कैंकर, कडुआ, लाल सड़न, अगोले की सड़न, उकठा, विवर्ण, सेहूँ, गेरूई या रतुआ, कण्डुआ आदि) को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

फसलों में लगने वाले रोगों के लक्षण, जिनपर अथ्रव फंगी गोल्ड बेहद असरदार है।

1. पौधे में भूरे रंग के छल्ले बन जाते हैं।
2. बड़े पीले रंग के धब्बे पत्तियों पर दिखाई देते हैं जो कि बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। जैसे ही धब्बे अधिक हो जाते हैं, पत्ते विकृत, मुरझा जाते हैं और गिर जाते हैं।
3. सफेद धब्बे आम तौर पर पत्तियों के नीचे दिखाई देते हैं जिसमें पौधों की पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं।
4. पत्तियां सूख जाती है और छोटी हो जाती हैं यहां तक कि पत्तियों का क्लोरोफिल भी नष्ट हो जाता हैं।
5. भूरे रंग के लाल घावों के साथ तना खराब हो जाता है।
6. सफेद अथवा भूरी रंग की फफूँदी भी विकसित हो जाती हैं।
7. पत्तियॉ दूधिया सफेद रंग की हो जाती है जो बाद में झाड़ीनुमा थान बना देती है।
8. बालियाँ छोटी एवं फैली हुई होती है और इनमें अनाज की जगह भूरे या काली रंग की गॅाठे बन जाती है जिनमें सूत्रकृमि पाये जाते है।
9. पत्तियों पर फॅफूदी के फफोले पड़ जाते है जो बाद में बिखर कर अन्य पत्तियों को ग्रसित कर देते है।
10. बालियों में दाने के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 7 से 10 ग्राम मिलाकर छिड़काव।
छिड़काव : बुवाई / रोपण के 25 से 45 दिन के बीच में (संक्रमण के संभावित समय से पहले)।
फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः पत्तियों पर छिड़काव।
पैकिंग : 21 ग्राम के एचडीपीई पाउच पैक मे।
उपलब्धता : पाउडर रूप में।
श्रेणी : जैविक फफूंदनाशी / कवकनाशी।
विशेष उपयोगः अथ्रव फंगी गोल्ड का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम फफूंदनाशी / कवकनाशी के स्थान पर किया जाता है।

AMRAT

अथ्रव अमृत आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक शक्तिवर्धक है जो पौधे में अजैविक तनाव के प्रति प्रतिरोध, पौधे के वृद्धि को बढ़ावा और जड़ /सूक्ष्म जीवों की क्रियाओं के प्रभाव में सुधार करता है।

अथ्रव अमृत दुर्लभ समुद्री शैवाल का अर्क है जो पौधों में लंबे समय तक पोषण बनाए रखता है और प्रतिकूल परिस्थितियों से प्रतिरोध विकसित करने के लिए एक आदर्श उत्पाद है जिसमे ग्रोथ हार्मोन होते हैं जो पौधों को टूटे हुए तने से ठीक कर सकते हैं।

अथ्रव अमृत जैविक गतिविधि को बढ़ाता है, बीज के अंकुरण और पौधों द्वारा मिट्टी के पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण को बढ़ावा देता है।

अथ्रव अमृत फूल की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि करता और फसल की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

अथ्रव अमृत पौधों के क्रियाविज्ञान पर कार्य करता है, शक्ति, उपज और गुणवत्ता बढ़ाने के साथ– साथ जुताई के बाद मिट्टी के संरक्षण में योगदान करता हैं।

उपयोग की मात्राः 16 ली पानी में 10 ग्राम मिलाकर छिड़काव।

उपयोग करने का समयः

पहला छिड़कावः किसी भी पौधों में कल्लों फुटाव के समय।

दूसरा छिड़कावः

1. बुवाई/रोपण के 30 से 40 दिन बाद या फली व फल पकने के पहले।
2. बेल वाली फसलों में 20 से 25 दिनों में या 20 से 25 दिनों के अंतराल पर।
3. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 6 महीने बाद या तने की ग्रंथि विकास के समय।
4. 2 साल से अधिक की फसलों में फूल आने से पहले।

फसलें :–बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंगः 15 ग्राम और 50 ग्राम के एचडीपीई पाउच पैक में।
उपलब्धताः पाउडर रूप में।
श्रेणीः जैविक उर्वरक।
विशेष उपयोगः अथ्रव अम्रत का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर किया जाता है।

KILLER 8

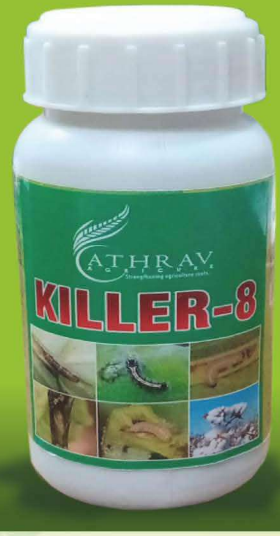

अथ्रव किलर 8 एक जैविक कीटनाशक है जो फसलों पर लगने वाले कीड़ों को नष्ट करने में बहुत ही कारगर है।

अथ्रव किलर 8 कीड़ों के संभोग के तरीकों को बाधित करके जीवनाशी के अण्ड समूह को प्रारम्भिक अवस्था में नष्ट करता है।

अथ्रव किलर 8 का उपयोग कीट प्रतिकारक के रूप में फसलों पर छिड़काव करके कीट नियंत्रण, रोग नियंत्रण और नेमाटोड नियंत्रण के लिए किया जाता है।

अथ्रव किलर 8 क्षतिकर कीड़ों जैसे लीफ बीटल, पतंगे, रूट मैगोट, सफेद गिडार, टिड्डे, ग्रीन हॉपर, ब्राउन हॉपर, कैटरपिलर, जड़ बेधक, तना छेदक, अंकुर बेधक, पायरिला, चोटी बेधक, पत्ती लपेटक, पोरी बेधक, फुदका, सैन्य कीट, पत्ती घाव कीट, बदबू वाले कीड़े, हिसपा, स्केल कीड़े, सूत्रकृमि, माहूँ, प्रोह मक्खी और सफेद मक्खी आदि के संक्रमण से फसलों को सुरक्षा प्रदान करता है।

फसलों में लगने वाले कीड़ों के संक्रमण के लक्षण, जिनपर अथ्रव किलर 8 बेहद असरदार है :

1. कीड़े पत्तियों और पौधे की जड़ को खाकर क्षति पहुंचाते है।
2. कीड़े तने में छिद्र बनाकर घुस जाते हैं और मृतसार बना देते हैं।
3. कीड़े वृद्धि बिन्दुओं को बेधकर मृत केन्द्र बनाते है जिसमें से सिरके जैसी बदबू आती है।
4. प्रभावित पत्तियाँ सूख जाती हैं और मध्य सिरा में एक लाल धारी सी पड़ जाती है।
5. संक्रमित पौधों में सामान्य पुष्प गुच्छ के स्थान पर सफेद बालियां निकलती हैं, जिनमें दाने नही बनते।
6. कीड़े पत्तियों तथा बालियों से रस चूसकर क्षति पहुँचाते है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 20 से 25 मिली मिलाकर छिड़काव।

पहला छिड़काव : बुवाई / रोपण के 35 से 55 दिन बाद (संक्रमण के संभावित समय से पहले)।

दूसरा छिड़काव : संक्रमण के लक्षण दिखने पर।

फसलें: बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

नोटः—अथ्रव किलर 8 फसलों में रोग लगने से पहले प्रारम्भिक अवस्था में ही अगर इसका प्रयोग किया जाता है तो यह फसलों में काफी प्रभावकारी होता है। इसका प्रयोग प्रायः प्रत्येक 20 से 25 दिन में किया जाए।

उपयोग की विधि : पत्तियों पर छिड़काव।
पैकिंग : 15 मिली, 30 मिली और 50 मिली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धता : तरल रूप में।
श्रेणी : जैविक कीटनाशक।
विशेष विकल्प : अथ्रव किलर 8 का उपयोग रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर किया जाता है।

MITE WIN

अथ्रव माइट विन का उपयोग घुन या टिक्स, विशेषकर ऐसी प्रजातियां जो सजावटी या खाद्य पौधों को नुकसान पहुंचाती हैं, को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

अथ्रव माइट विन आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले घुननाशकों से अधिक संवेदनशील है और घुन या टिक्स को संक्रमण से पहले ही नष्ट कर देता है।

अथ्रव माइट विन कीट– पतंगों को अंडे से वयस्क तक सभी जीवन चरणों में नियंत्रित करके लंबे समय तक असर दिखाता है।

अथ्रव माइट विन मकड़ी की कुटकी, काला चिटका, लाल मकड़ी, धब्बेदार मकड़ी, दो–चित्तीदार मकड़ी, घोंघे और स्लग, स्पाइडर घुन, लाल घुन, कारमाइन मकड़ी, स्प्रूस मकड़ी, साइक्लेमेन घुन, कली घुन, गंधीबग, मिलीबग, दीमक, रसेट घुन, ब्रॉड घुन, बल्ब घुन आदि के संक्रमण को रोकने में बहुत प्रभावशाली है।

फसलों में लगने वाले कीट– पतंगों के संक्रमण के लक्षण, जिनपर अथ्रव माइट विन बेहद असरदार है :

1. पत्तियों का पीलापन, कर्लिंग और विलिंग, फूलों का झड़ना और फलों का फटना।
2. पौधे पीले, रूखे, मुरझा जाते हैं, फूल और फल सिकुड़ जाते हैं और विकृत हो जाते हैं।
3. पत्तियाँ धब्बेदार हो जाती हैं और दरारें पड़ जाती हैं।
4. भारी रूप से संक्रमित पत्तियां कांस्य और सूखी हो जाती हैं।
5. तना कांसे का हो जाता है और कठोर रूप धारण कर लेता है, पत्ती झड़ जाती है और फल की त्वचा खुरदरी हो जाती है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 30 से 40 मिली मिलाकर छिड़काव।

पहला छिड़काव : बुवाई / रोपण के 70 से 80 दिन बाद (संक्रमण के संभावित समय से पहले)।

दूसरा छिड़काव : संक्रमण के लक्षण दिखने पर।

फसलें : बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधिः पत्तियों पर छिड़काव।
पैकिंग : 15 मिली और 50 मिली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धता : तरल रूप में।
श्रेणी : जैविक माइटीसाइड (घुननाशक)।
विशेष विकल्प : अथ्रव माइट विन का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम माइटीसाइड्स (घुननाशक) के स्थान पर किया जाता है।

A- 4 STICKER

अथ्रव ए– 4 स्टीकर एक सिलिकॉन स्टीकर है जो चिपकने वाला, स्प्रेडर, फैलाने वाला, और सहायक के रूप में भूमिका निभाता है जो उर्वरकों का अपव्यय करके, लागत को कम करता है और लाभप्रदता में सुधार करता है।

अथ्रव ए– 4 स्टीकर किसी भी अथ्रव उत्पाद, कवकनाशक, कीटनाशक, पीजीआर जैसे तरल पदार्थों को पत्ती और पौधे पर समान रूप से फैलाने और चिपकाने का कार्य करता है।

अथ्रव ए– 4 स्टीकर एक उत्प्रेरक के रूप में किसी भी अथ्रव उत्पाद के प्रभाव को बढ़ाने में मदद करता है।

अथ्रव ए– 4 स्टीकर पानी में घुलकर समरूप मिश्रण बनाता है जिससे यह पत्तियों और शाखाओं पर प्रभावी रूप से काम करता है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 10 से 15 मिली मिलाकर छिड़काव।

उपयोग करने का समय : किसी भी अथ्रव उत्पाद (पाउडर या तरल) के साथ मिलाकर स्प्रे कर सकते हैं।

फसलें :

बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि : पत्तियों पर छिड़काव।
पैकिंग : 50 मिली, 100 मिली
उपलब्धता : तरल रूप में।
श्रेणी : जैविक स्प्रेडर / स्टिकर।
विशेष विकल्प : अथ्रव ए – 4 स्टिकर का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम स्प्रेडर /स्टिकर के स्थान पर किया जाता है।

ALL IN ONE

अथ्रव आल इन वन आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक उत्पाद है जो एंजाइमों और वांछनीय सूक्ष्मजीवों के प्रसार को उत्तेजित करता है।

अथ्रव आल इन वन फूलभागों की वृद्धि को विकास करके जल्दी फल स्थापना को बढ़ावा देता है, कल्लों की संख्या में वृद्धि करता है और फूलों को झड़ने से रोकता है।

अथ्रव आल इन वन पौधों में प्रारंभिक परिपक्वता को बढ़ाता है जिससे मित्र जीवाणु जड़ बालों के माध्यम से जड़ में प्रवेश करते हैं और जड़ पर ग्रंथि बनाते हैं। यह ग्रंथि पौधे की वृद्धि करती है।

अथ्रव आल इन वन फल और फूल उत्पादन के साथ– साथ फसल परिपक्वता, उन्नयन बीज अंकुरण में सुधार करता है, फलों को मजबूत बनाता है और उन्हें गिरने नहीं देता है।

अथ्रव आल इन वन जड़ निर्माण, जड़वृद्धि और जड़ सुदृढ़ीकरण में भी मदद करता है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 25 से 30 मिली मिलाकर छिड़काव।

पहला छिड़काव : बुवाई / रोपण के 55 से 60 दिन बाद या फूल आने से पहले।

दूसरा छिड़काव : फल बनने की प्रक्रिया के समय।

1. बेल वाली फसलों में 40 से 45 दिनों में या फूल आने से पहले।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 6 महीने बाद।
3. साल से अधिक की फसलों में फूल व फल आने से पहले।

उपयोग की विधि : पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।

फसलें : बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

पैकिंग : 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली और 1 ली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धता : तरल रूप में।
श्रेणी : जैविक उर्वरक।
विशेष विकल्प : अथ्रव आल इन वन का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर किया जाता है।

NATURAL 99

अथ्रव नेचुरल 99 आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक संपूरक है जो की अम्लीय और क्षारीय दोनों प्रकार की मिट्टी को उदासीन करके मिट्टी के पी एच मान को नियंत्रित करता है।

अथ्रव नेचुरल 99 पानी की सूक्ष्म तत्वों में प्रवेश करने, मिट्टी के मध्यवर्ती गुणों को और मिट्टी की जल– धारण क्षमता को बढ़ाता है।

अथ्रव नेचुरल 99 मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करता हैं, पौधे की जड़ वृद्धि को बढ़ाता हैं, बीज के अंकुरण को बढ़ाता हैं और पौधों को पर्यावरणीय तनाव से निपटने में मदद करता हैं।

अथ्रव नेचुरल 99 खाद की गंध को दूर करता हैं और कार्बोहाइड्रेट उत्पादन को बढ़ावा देता है।

अथ्रव नेचुरल 99 पौधों के भीतर एक हार्मोन की तरह कार्य करता है और मिट्टी में पाए जाने वाले मित्र जीवाणुओ में वृद्धि करता है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 25 से 30 मिली मिलाकर छिड़काव।

पहला छिड़काव : बुवाइ / रोपण के 60 से 65 दिन बाद।

दूसरा छिड़काव : बुवाई / रोपण के 70 से 80 दिन बाद या फली व फल पकने के पहले।

1. बेल वाली फसलों में 50 से 55 दिनों में या फूल आने के पहले।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 4 महीने बाद या तने की ग्रंथि विकास के समय।
3. 2 साल से अधिक की फसलों में फूल आने से पहले।

फसलें : बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि : बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंग : 100 मिली, 250 मिली, 500 मिली और 1 ली के एचडीपीई बोतल पैक में।
उपलब्धता : तरल रूप में।
श्रेणी : जैविक उर्वरक।
विशेष विकल्प : अथ्रव नेचुरल 99 का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर किया जाता है।

BIOPOWER

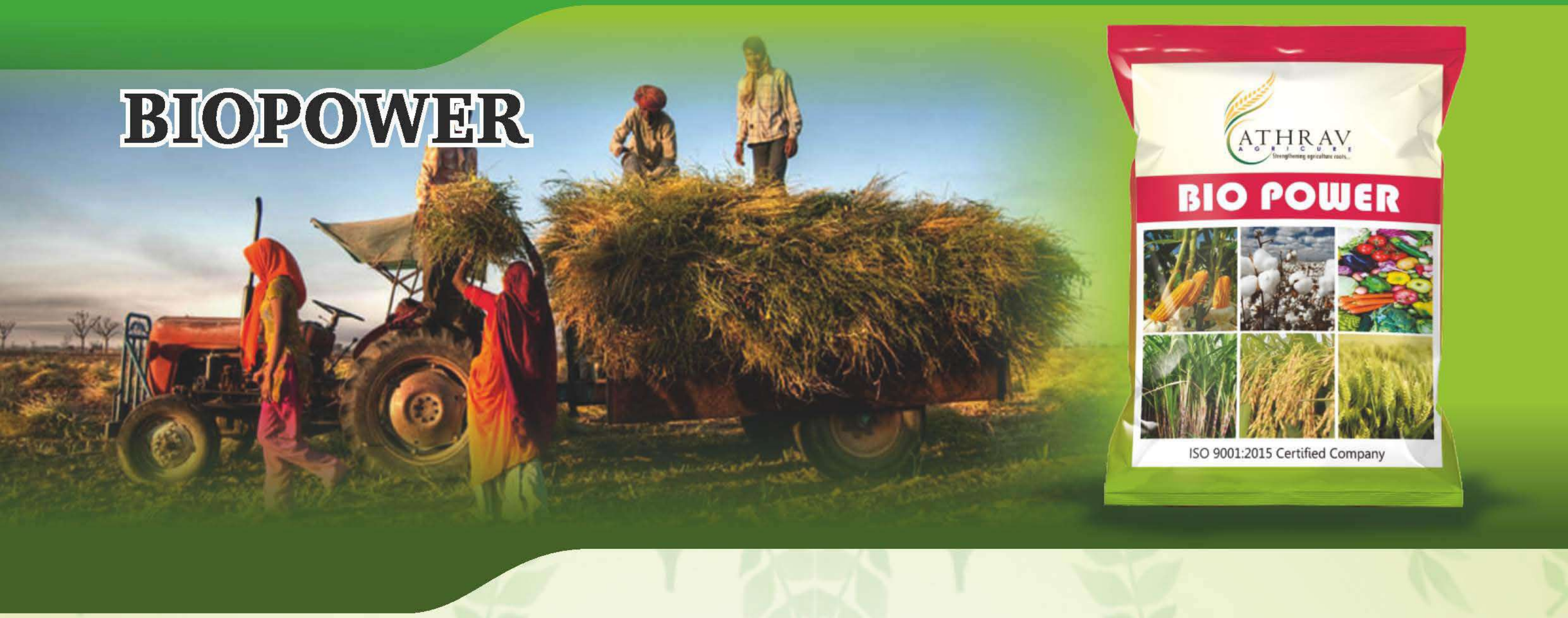

अथ्रव बायो–पॉवर आधुनिक नैनो तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा निर्मित जैविक शक्तिवर्धक है जो पौधे की जड़ के विकास, तथा पाचन को बढ़ाता है और बीज के अंकुरण को उन्नत करता है।

अथ्रव बायो–पॉवर पौधों के भीतर हार्मोनल गतिविधि को बढ़ावा देता है और उनके संश्लेषण को प्रेरित करता है जिसके परिणामस्वरूप फूल और फल की स्थापना बढ़ जाती है।

अथ्रव बायो– पॉवर पौधों को प्राकृतिक व्यग्रताओं से संभलने में मदद करता है और मिट्टी की सूक्ष्म वनस्पतियों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

अथ्रव बायो–पॉवर फसलों में अजैविक रोग जो पौधों में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों की कमी के कारण उत्पन्न होते हैं जैसे खैरा रोग (जस्ता की कमी), मार्श रोग (मैंगनीज की कमी), डाइबैक रोग (तांबा की कमी), लिटिल लीफ रोग (जस्ता की कमी) आदि के प्रति अधिक प्रतिरक्षा, प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

अथ्रव बायो–पॉवर फलों के रंग, आकार, चमक और स्वाद के साथ–साथ फलों की गुणवत्ता विकसित करने की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है और पौधे को समग्र स्वस्थ विकास प्रदान करने में सहायता प्रदान करता है।

अथ्रव बायो– पॉवर पौधे के समायोजित विकास को उन्नत बनाता है और फसलों की गुणवत्ता में वृद्धि करता है।

उपयोग की मात्रा : 16 ली पानी में 12 ग्राम मिलाकर छिड़काव।

उपयोग करने का समय :

पहला छिड़काव : बुवाई /रोपण के 65 से 70 दिन बाद या तने की ग्रंथि विकास के समय।

दूसरा छिड़काव : बुवाई /रोपण के 110 से 115 दिन बाद या फली व फल पकने के पहले।

1. बेल वाली फसलों में 55 से 60 दिनों में या फूल आने के पहले।
2. 1 साल से 2 साल की फसलों में प्रत्येक 6 महीने बाद या तने की ग्रंथि विकास के समय।
3. 2 साल से अधिक की फसलों में फूल आने से पहले।

फसलें :– बीज और अनाज वाली फसलें, दलहनी फसलें, तेल वाली फसलें, फाइबर वाली फसलें, वृक्षारोपण वाली फसलें, मसाले वाली फसलें, सब्जियों वाली फसलें, बेल वाली फसलें, फलों वाली फसलें, फूलों के पौधे, औषधीय एवं नर्सरी पौधे आदि के लिए उपयोगी।

उपयोग की विधि : बीजोपचार, पत्तियों पर छिड़काव, सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
पैकिंग : 50 ग्राम और 100 ग्राम के एचडीपीई पाउच पैक मे।
उपलब्धता : पाउडर रूप में।
श्रेणी : जैविक उर्वरक।
विशेष उपयोग : अथ्रव बायो– पॉवर का उपयोग रासायनिक या कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर किया जाता है।

COMPANY SEMINARS

UTTAR PRADESH

KARNATAKA

TELANGANA

JAMMU KASHMIR

COMPANY SEMINARS

GUJARAT

DELHI

MADHYA PRADESH

TAMILNADU

COMPANY SEMINARS

UTTRAKHAND

WEST BENGAL

RAJASTHAN

MAHARASHTRA

COMPANY SEMINARS

HARYANA

NAGALAND

ODISHA

ASSAM

COMPANY SEMINARS

ANDHRA PRADESH

JHARKHAND

BIHAR

CHATTISGARH

COMPANY SEMINARS

TRIPURA

Photo Gallery of Central, State Ministers and various Head of Departments who have contributed immensely to the rise of Athrav Group with our Managing Director

ATHRAV
AGRICURE
Strengthening agriculture roots...

पुंज

Manufactured & Marketed by :

Athrav Agricure Pvt. Ltd.

ISO 9001:2001 Certified Company

Head Office : 10/87, Gautam Buddha Park, Munsi Pulia, Indira Nagar, Lucknow.
Phone : 0522-4954025

Website : www.athravagricure.com | Email : info@athravagricure.com